माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
बुक कीपिंग	3 2 0	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

उत्तरपुस्तिका का सरल क्रमांक

320 - 2822801

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

-	2	0	6	2	3	2	2	7	2

शब्दों में

-	दो	शून्य	छः	दो	तीन	दो	दो	सात	दो

EDUCATIONMADHYAPRADESH

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 00 शब्दों में 00

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 29

ग :– परीक्षा का दिनांक 10 06 2020

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकेण्डरी परीक्षा-2020 केन्द्र क्र. 622002

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
K. S. Var...	

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
पंकज शर्मा	9424071637

नोट :- "हायर सैकेण्डरी परीक्षा में केवल वाणिज्य संकाय के विषयों तथा हाईस्कूल परीक्षा में प्रायोगिक विषय को छोड़कर शेष विषयों हेतु नियमित एवं स्वाध्यायी छात्रों के लिये प्रश्न पत्र 100 अंकों का होगा किन्तु नियमित छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक का 80% अधिभार एवं स्वाध्यायी छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ही अंकसूची में प्रदर्शित किये जायेंगे।"

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	
20	
21	
22	
23	
24	
25	
26	
27	
28	

पृष्ठ 2 के अंक

प्रश्न क्र.

उत्तर क्र. :- 1

1) गैर - व्यापारिक संस्थाओं द्वारा

2) अधिलाभ

3) 3 : 1

4) उसके भाग की ख्याति के साथ

5) साझेदारों के पूँजी खाते में

उत्तर क्र. :- २

1) प्राप्ति - भुगतान खाता

2) जिब फर्म द्वारा साझेदारी संलेख बनाया जाता है।

3) 5 : २

4) अनिवार्य समापन

5) वाहक ऋणपत्र

B S E

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्र. :- 3

1) आहरण पर ब्याज

2) ~~वसूली खाते में~~ पुनर्मूल्यांकन खाते में

3) लाभ

4) वसूली खाते में

5) 2 : 1

B
S
E

उत्तर क्र. :- 4

1) केवल व्यक्ति ही — साझेदार बन सकते हैं

2) लाभ (नफे) का अनुपात — नया अनुपात - पुराना अनुप

3) वसूली खाते में सम्पत्तियाँ - पुस्तक मूल्य पर दर्शायी जाती

4) स्थायी सम्पत्ति का क्रय — विनियोग क्रिया

5) ऋणपत्रों के निर्गमन पर कटौती — कृत्रिम सम्पत्ति

प्रश्न क्र.

उत्तर क्र. :- 5

1) असत्य

2) सत्य

3) सत्य

4) सत्य

5) असत्य

उत्तर क्र. :- 6

गैर व्यापारिक संस्था :- ऐसी संस्थाएँ जिनका उद्देश्य लाभ कमाना नहीं होता बल्कि समाज व अपने सदस्यों को निश्चित सेवा प्रदान करना होता है गैर - व्यापारिक संस्थाएँ कहलाती हैं। इन संस्थाओं में पुस्तकालय, विद्यालय, क्लब आदि को शामिल किया जाता है। इन्हे अलाभकारी संस्थाएँ भी कहते हैं।

50/

उत्तर क्र. :- 7

त्याग का अनुपात :- जब कभी साझेदारों के लाभ - हानि अनुपात में परिवर्तन होता है तो

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

एक या एक से अधिक साझेदारों द्वारा अन्य किसी साझेदार ~~या~~ या साझेदारों के पक्ष में अपने पुराने भाग का कुछ भाग समर्पण करते हैं। समर्पण भाग का अनुपात ही त्याग का अनुपात है। त्याग अनुपात की गणना निम्न सूत्र से की जाती है -

त्याग अनुपात = पुराना अनुपात - नया अनुपात

उत्तर क्र. :- 8

त्वरित अनुपात ⇒

त्वरित या तरल अनुपात तरल सम्पत्तियों तथा चल दायित्वों के बीच सम्बंध स्थापित करता है। यह अनुपात बताता है कि कम्पनी अपने चल दायित्वों का भुगतान अपनी तरल सम्पत्तियों से तत्काल कर सकती है। तरल अनुपात की गणना निम्न सूत्र से की जाती है -

$$\text{तरल अनुपात} = \frac{\text{तरल सम्पत्तियाँ}}{\text{चल दायित्व}}$$

यदि यह अनुपात 1 : 1 है तो यह आदर्श स्थिति होती है।

उत्तर क्र. :- 9 (अथवा)

वित्तिय विश्लेषण की सीमाएँ :-

(1) मूल्य परिवर्तन को शामिल नहीं करना :-

वित्तिय

B S E

प्रश्न क्र.

विश्लेषण मे मूल्य परिवर्तन को शामिल नहीं किया जाता है जिससे सम्पत्तियों का मूल्य, उत्पादित माल का मूल्य तथा विक्रय मूल्य चालू मूल्य नहीं होते।

(2) ~~एकरूक~~ एकरूपता की कमी :-

वित्तिय विश्लेषण में एकरूपता की कमी होती है जिससे तुलनात्मक अध्ययन करने में असुविधा रहती है।

B
S
E

उत्तर क्र. :- 10 (अथवा)

बेंचे गये माल की गणना दो प्रकार से की जा सकती है। जिनके सूत्र निम्न लिखित हैं -

(1) बेंचे गये माल की लागत = शुद्ध विक्रय - सकल लाभ

(2) बेंचे गये माल की लागत = प्रारंभिक रहतिया + क्रय + प्रत्यक्ष व्यय - अंतिम रहतिया

उत्तर क्र. :- 11

स्थाई पूँजी तथा परिवर्तनशील पूँजी में अंतर :-

अंतर का आधार	स्थिर पूँजी खाता	परिवर्तनशील पूँजी खाता
(1) शेष	इसका शेष हमेशा ही Cr.	इसका शेष मुख्यतः

प्रश्न क्र.

	(क्रेडिट) रहता है।	Cr. (~~डेबिट~~ क्रेडिट) रहता है परन्तु कभी-कभी (डेबिट) भी हो जाता है। Dr.
2) लेखे की मदें	2) इस खाते में केवल पूँजी का लेखा किया जाता है।	2) इस खाते में पूँजी के अतिरिक्त पूँजी पर ब्याज, आहरण, वेतन आदि का लेखा भी किया जाता है।
3) पूँजी की स्थिरता	3) इस खाते में पूँजी स्थिर रहती है।	3) इस खाते में पूँजी में लगातार परिवर्तन होते रहते हैं।
4) चालू खाता	4) इस प्रणाली में चालू खाता अलग से खोलना पड़ता है।	4) इस प्रणाली में किसी और खाते को खोलने की आवश्यकता नहीं है।

उत्तर क्र. :- 12

~~साझेदार~~ साझेदारी के विघटन एवं फर्म के विघटन में अंतर :-

अंतर का आधार	साझेदारी के विघटन	फर्म के विघटन
1) सम्बंध	1) इसमें एक या दो साझेदार ही फर्म से अलग होते हैं।	1) इसमें फर्म के समस्त साझेदारों के मध्य आपसी सम्बंध समाप्त हो जाते हैं।
2) व्यापार की स्थिति	2) साझेदारी के विघटन के पश्चात व्यापार चालू रहता है। बंद नहीं होता।	2) फर्म के विघटन के पश्चात व्यापार पूर्ण रूप से बंद हो जाता है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

3)	विघटन	3) साझेदारी के विघटन के साथ फर्म का विघटन होना अनिवार्य नहीं है।	3) फर्म के विघटन के साथ साझेदारी का पूर्ण रूप से विघटन हो जाता है।
4)	खाता	4) साझेदारी के विघटन पर पुनर्मूल्यांकन खाता खोलते हैं।	4) फर्म के विघटन पर वसूली खाता खोलते हैं।

उत्तर क्र. 8-13 (अथवा)

वसूली खाता :-

फर्म के विघटन पर समस्त सम्पत्तियों (रोकड़ एवं बैंक छोड़कर) तथा समस्त दायित्वों (संचय, आधिक्य, पूँजी, व्यक्तिगत ऋण को छोड़कर) को जिस खाते मे हस्तांतरित किया जाता है उसे वसूली खाता कहते हैं। यह नाममात्र का खाता होता है। वसूली खाते में सम्पत्तियों की बिक्री से प्राप्त रोकड़ तथा दायित्वों के भुगतान में देय रोकड़ का लेखा वसूली खाते में किया जाता है। वसूली खाते में वसूली व्ययों का लेखा करने के पश्चात वसूली पर लाभ-हानि की गणना की जाती है तथा लाभ-हानि को पुराने साझेदारों के पुराने अनुपात में बाँटकर सभी साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तांतरित किया जाता है।

BSE

9.1x33.9mmx16

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

उत्तर क्र. :- 14

अंश एवं स्कंध में अंतर :-

अंतर का आधार	अंश	स्कंध
1) अंकित मूल्य	1) अंश का अंकित मूल्य होता है।	1) स्कंध का कोई अंकित मूल्य नहीं होता है।
2) पूर्ण चुकता	2) अंश का पूर्ण चुकता होना आवश्यक नहीं है।	2) स्कंध का पूर्ण चुकता होना अतिआवश्यक है।
3) रजिस्टर्ड	3) अंश सदैव रजिस्टर्ड होते है।	3) स्कंध दोनो प्रकार के होते हैं।
4) सदस्य	4) अंशधारी कम्पनी का सदस्य होता है।	4) स्कंधधारी का सदस्य होना आवश्यक नहीं है।

BSE
er Label A4ST-16 9

उत्तर क्र. :- 15

साझेदारी की मुख्य विशेषताएँ निम्न लिखित हैं -

(1) कम - से - कम 2 सदस्य :-

साझेदारी व्यवसाय में कम-से-कम दो सदस्य होना चाहिए। एक व्यक्ति साझेदार नहीं कहलाता है। तथा अधिकतम सदस्य संख्या 20 से ज्यादा नहीं होना चाहिए।

प्रश्न क्र.

2) वैध व्यवसाय :- साझेदारी अनुबंध किसी वैध व्यवसाय को चलाने के लिए किया गया हो । अवैध व्यवसाय की साझेदारी , साझेदारी में शामिल नहीं है ।

3) फर्म का संचालन :- साझेदारी व्यवसाय का संचालन सभी साझेदारों द्वारा या सभी की सहमति से किसी एक साझेदार द्वारा किया जाना चाहिए ।

B
S
E

4) असीमित दायित्व :- साझेदारी व्यवसाय में सम्मिलित प्रत्येक साझेदार का दायित्व असीमित होता है ।

5) फर्म का एजेण्ट :- साझेदारी व्यवसाय में प्रत्येक साझेदार फर्म का एजेण्ट होता है ।

उत्तर क्र. :- 16 (अथवा)

पुराना अनुपात = A : B

= 1 : 3

$= \frac{1}{4} : \frac{3}{4}$

माध्यमिक शिक्षा मंडल मध्यप्रदेश

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

नया अनुपात = A : B

= 1 : 1

= $\frac{1}{2} : \frac{1}{2}$

त्याग अनुपात = पुराना अनुपात − नया अनुपात

= A : B

= $\left(\frac{1}{4} - \frac{1}{2}\right) : \left(\frac{3}{4} - \frac{1}{2}\right)$

= $\left(\frac{1-2}{4}\right) : \left(\frac{3-2}{4}\right)$

= $\frac{-1}{4} : \frac{1}{4}$

= A : B

अत: A को प्राप्ति = $\frac{1}{4}$

B द्वारा त्याग = $\frac{1}{4}$ Ans

BSE

उत्तर क्र. 17 (अथवा)

फर्म का औसत लाभ = 84,000

साझेदारों को पारिश्रमिक = 12000

अत: शुद्ध औसत लाभ = 84000 − 12000

= 72000

प्रश्न क्र.

विनियोजित पूजी = 5,00,000
विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय = 12%

अतः सामान्य लाभ = $\frac{\text{विनियोजित पूजी} \times \text{विनियोजित पूजी पर प्रत्याय}}{100}$

$= \frac{5,00,000 \times 12}{100}$

सामान्य लाभ = 60,000

अतः अधिलाभ = औसत लाभ − सामान्य लाभ
= 72000 − 60,000
= 12000

B
S
E

ख्याति = $\frac{\text{अधिलाभ}}{\text{विनियोजित पूँजी पर प्रत्याय}} \times 100$

$= \frac{12000}{12} \times 100$

= 1000 × 100

ख्याति = ₹ 100000 Ans

उत्तर क्र. :- 18

कम्पनी की प्रमुख विशेषताएँ निम्न लिखित हैं :-

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

BSE

(1) ~~सननि~~ राजनियम द्वारा निर्मित :-

कम्पनी का जन्म कानून के अधीन होता है तथा अंत भी राजनियम की व्यवस्थाओं के अन्तर्गत होता है।

(2) पृथक अस्तित्व :-

कम्पनी का अस्तित्व अंशधारियों से पृथक होता है जबकि अंशधारी कम्पनी के स्वामी होते हैं। पृथक अस्तित्व के कारण ही कम्पनी, अन्य पक्षों पर तथा अन्य पक्ष, कम्पनी पर वाद प्रस्तुत कर सकते हैं।

3) सीमित उत्तरदायित्व :-

कम्पनी के प्रत्येक सदस्य का उत्तरदायित्व सीमित होता है। अंशधारी का दायित्व उसके क्रय किए गए अंशो की मात्रा या दी गई गारण्टी तक ही सीमित होता है।

4) सार्वमुद्रा :-

कम्पनी की एक सार्वमुद्रा होती है जो कि सर्वमान्य होती है। इसे कम्पनी के हस्ताक्षर के रूप में स्वीकारा जाता है। सार्वमुद्रा के लगने पर ही ~~कम्पनी~~ स्वयं अनुबंध में बंधती है तथा अन्य को बांधती है।

उत्तर क्र. :- 19

अंशपत्र एवं ऋणपत्र में अंतर निम्न है -

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL
BSE

प्रश्न क्र.

अंतर का आधार	अंशपत्र	ऋणपत्र
1) प्रतिफल	1) अंशपत्रों का प्रतिफल लाभांश होता है।	1) ऋणपत्रों का प्रतिफल ब्याज होता है।
2) स्थिति	2) यह कम्पनी के स्वामी होते हैं।	2) यह कम्पनी के लेनदार होते हैं।
3) पूंजी / ऋण	3) कम्पनी को अंशपत्रों पर प्राप्त राशि पूंजी कहलाती है।	3) कम्पनी को ऋणपत्रों पर प्राप्त राशि ऋण कहलाती है।
4) प्रबंध में भाग	4) ये कम्पनी के प्रबंध में भाग ले सकते हैं।	4) यह कम्पनी के प्रबंध में भाग नहीं ले सकते हैं।
जोखिम	5) इन पर अधिक जोखिम होती है।	5) इन पर कम जोखिम होती है।

उत्तर क्र. :- 20

ऋणपत्रों के शोधन की विधियाँ :-

(1) लॉटरी विधि :

इस विधि के अन्तर्गत ऋणपत्रों का शोधन प्रत्येक वर्ष ऋणपत्रों के सम्पूर्ण जीवन काल तक किया जाता है। यह प्रक्रिया इस तरह व्यवस्थित की जाती है

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

कि ऋणपत्रों के जीवनकाल के समाप्त होने पर सम्पूर्ण ऋणपत्रों का शोधन हो जाए। इसके लिए विभिन्न ऋणपत्रों की संख्या के समूह की पर्चियाँ डाल दी जाती हैं। लॉटरी के आधार पर पर्ची निकालकर ऋणपत्र का शोधन उस वर्ष कर दिया जाता है।

2) एकमुश्त राशि का भुगतान :-

कम्पनी द्वारा ऋणपत्रों की समस्त राशि को एक साथ या किश्तों में निश्चित अवधि के उपरांत भुगतान कर दिया जाता है। यह तिथि या अवधि ऋणपत्रों की परिपक्वता तिथि हो सकती है या कम्पनी द्वारा घोषित ऐसी तिथि जो ऋणपत्रों के शोधन की शर्तों के अनुसार हो।

3) खुले बाजार से ऋणपत्रों का क्रय :-

जब कम्पनी को ऐसा प्रतीत होता है कि खुले बाजार से ऋणपत्रों को खरीदना लाभदायक है तथा स्वयं के ऋणपत्रों को खरीदना आसान है तब कम्पनी ऋणपत्रों का खुले बाजार से क्रय करना प्रारंभ कर देती है।

4) अंशों में परिवर्तन :-

कम्पनी परिवर्तनशील ऋणपत्रों

BSE

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

का निर्गमन करती है जिसमें ऋणपत्रधारियों को यह अवसर प्राप्त होता है कि वह अपने ऋणपत्रों को समता या पूर्वाधिकार अंशो में परिवर्तित करा सकते हैं। चुनाव का अवसर प्राप्त होने पर ऋणपत्रधारी अपने ~~अंशों~~ ऋणपत्रों को अंशो में बदलवा सकते हैं।

उत्तर क्र. ~~4~~ 21 (अथवा)

वित्तिय विवरण की सीमाएँ :-

1) समंको की अशुद्धता :- वित्तिय विवरण में जो समंक ~~ब~~ होते है वो अशुद्ध होते हैं। उनकी ~~शुद्ध~~ शुद्धता सम्भव नही है।

2) ऐतिहासिक लागत :- वित्तिय विवरण का निर्माण ऐतिहासिक लागत पर किया जाता है। जिससे यह व्यवसाय की वास्तविक स्थिति को नहीं दर्शाते हैं।

3) अनुमानित तथ्य :- वित्तिय विवरण में कुछ तथ्य पूर्णत: अनुमानित तथ्य होते हैं। जिसका प्रभाव ~~व्य~~ व्यवसाय की वित्तिय स्थिति पर पड़ता है।

4) गैर- वित्तिय कारक :- वित्तिय विवरण में गैर वित्तिय कारकों को शामिल नही किया जाता

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

है जिसका प्रभाव व्यवसाय की वित्तिय स्थिति पर प्रतिकूल रूप में पड़ता है।

उत्तर क्र. 22

प्राप्ति - भुगतान खाता तथा आय - व्यय खाते में अंतर :-

	अंतर का आधार	प्राप्ति - भुगतान खाता	आय - व्यय खाता
1)	प्रकृति	1) यह वास्तविक खाता होता है।	1) यह नाममात्र का खाता होता है।
2)	निर्माण	2) यह रोकड़ बही की सहायता से बनाया जाता है।	2) यह प्राप्ति - भुगतान खाते की सहायता से बनाया जाता है।
3)	मदें	3) इसमें पूंजीगत तथा आयगत दोनो मदें लिखी जाती हैं।	3) इसमें आयगत मदों को ही लिखा जाता है।
4)	रोकड़ शेष	4). इसमें प्रारंभिक तथा अंतिम दोनो रोकड़ शेष लिखे जाते हैं।	4) इसमें किसी भी रोकड़ शेष को नहीं लिखा जाता है।
5)	पक्ष	5) इसमें डेबिट पक्ष में प्राप्तियाँ तथा क्रेडिट पक्ष में भुगतान का लेखा किया जाता है।	5) इसमें डेबिट पक्ष में व्ययों का तथा क्रेडिट पक्ष में आयों का लेखा किया जाता है।

BSE

EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर क्र. :- 23

निवृत्तमान साझेदार को देय राशि की गणना निम्न प्रकार से की जाती है -

देय राशि में निम्न लिखित को जोड़ा जाता है -

(1) पूँजी खाते का Cr. शेष
(2) चालू खाते का Cr. शेष
(3) लाभ - हानि खाते का Cr. शेष
(4) संचय
(5) आधिक्य
(6) पुनर्मूल्यांकन पर लाभ
(7) अन्य लाभ

B S E

देय राशि में निम्न लिखित को घटाया जाता है -

(1) आहरण
(2) पूँजी खाते का Dr. शेष
(3) चालू खाते का Dr. शेष
(4) लाभ - हानि खाते का Dr. शेष
(5) ~~पुनर्मूल्यांकन~~ पुनर्मूल्यांकन पर हानि
(6) अन्य हानि

इस प्रकार निवृत्तमान साझेदार की देय राशि की गणना की जाती है।

प्रश्न क्र.

उत्तर क्र. ~~8~~ २४

निम्नलिखित श्रेणियों में अंशपूँजी को बाँटा जाता है -

(1) अधिकृत या पंजीकृत पूँजी :-

कम्पनी की वह पूँजी जिसका उल्लेख पार्षद सीमा नियम में होता है तथा जिससे अधिक पूँजी का निर्गमित नहीं किया जा सकता, अधिकृत पूँजी कहलाती है। यह कम्पनी की अधिकतम पूँजी कहलाती है।

B

S

E

(2) निर्गमित पूँजी :-

अधिकृत पूँजी का वह भाग जो जनता में बेचने के लिए प्रस्तुत किया जाता है, निर्गमित पूँजी कहलाती है।

(3) प्रार्थित पूँजी :-

निर्गमित पूँजी का वह भाग जिसे जनता ~~द्वारा~~ क्रय कर लिया जाता है या जनता जिसके लिए आवेदन पत्र भेजती है प्रार्थित पूँजी कहलाती है।

4) याचित पूँजी :-

प्रार्थित पूँजी का वह भाग जो जनता से माँग लिया जाता है। याचित पूँजी कहलाता है।

(5) चुकता पूँजी :-

याचित पूँजी का वह भाग जो

प्रश्न क्र.

जनता द्वारा भुगतान कर दिया जाता है, चुकता पूँजी कहलाता है।

(6) संचित पूँजी :-

न माँगी गई पूँजी के उस भाग को संचित पूँजी कहते हैं जो सिर्फ कम्पनी के समापन पर ही माँगी जाती है। कम्पनी के जीवनकाल में नहीं। इसे सुरक्षित पूँजी भी कहते हैं।

B
S
E

उत्तर क्र. :- 25

$$\text{तरल अनुपात} = \frac{\text{तरल सम्पत्तियाँ}}{\text{चालू दायित्व}}$$

तरल सम्पत्तियाँ = चालू सम्पत्ति − (स्कंध + पूर्वदत्त व्यय)

= 80,000 − (20,000 + 10,000)

= 80,000 − 30,000

तरल सम्पत्तियाँ = 50,000

चालू दायित्व = 50,000

$$\text{तरल अनुपात} = \frac{\text{तरल सम्पत्तियाँ}}{\text{चालू दायित्व}}$$

$$= \frac{50,000}{50,000} = \frac{1}{1}$$

तरल अनुपात = 1 : 1 Ans

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL
मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र. कुल -

उत्तर क्र. 8 → 26 (अथवा)

रोकड़ के अन्तर्प्रवाह या स्रोत के उदाहरण :-

(1) अंशो के निर्गमन द्वारा
(2) ऋणपत्रों के निर्गमन द्वारा
(3) ऋण में वृद्धि
(4) स्थाई सम्पत्तियों का विक्रय
(5) विनियोगों का विक्रय

रोकड़ के बाह्यप्रवाह या प्रयोग के उदाहरण :-

(1) ऋणपत्रों के शोधन द्वारा
(2) शोधनीय पूर्वाधिकार अंशो के शोधन द्वारा
(3) ऋणों का पुनर्भुगतान
(4) स्थाई सम्पत्तियों का क्रय
(5) विनियोगों का क्रय

समाप्त